

[illegible]

वलिदद्यात् ॥ मयूनास्त्राय वादूकां ॥ ७ ॥ दवीयूयवु कनाथमहा ॥ ८ ॥
जगद्वानरासून शिनरा द्वालासूय नूव धूगन २ ७ ॥ कदिरुगवन्मधुलम ॥ ९ ॥
यथायनीर्तवलि गृह २ वांकिगार्थ ददस्वमदू रूट्वाहा ॥ गर्जनिमूडा ॥ १० ॥
का ॥ १ ॥ ॥ जेनवासन वायू ॥ १ ॥ जेनवस्मानाधियतय यथनामनूगम
धुलम ॥ १ ॥ नूवगन २ चहुंजुजायगिनगाय काद्यस्वन्नधूलवाद्यय महाकवा
लारवधायविद्युत्काटिसमयराय ७ ॥ कदिरुगवन् लेनव नूयध यथायय

नान्नवल्लिगृह २ ममविद्याकादय । ॐ ज्ञं ज्ञं ज्ञं कूं रुद्र स्वाहा ॥ नन्नवल्लि ॥ द
धुमूजा ॥ कणयात् ४॥ २ ॥ ॐ ज्ञं सिंहासन यायू ॥ ॐ ज्ञं यकविद्यागिनीनां या
० जा कणजा सहजा यागजामनुजा कलजा सदाहजा ४॥ यकविद्यागिनीनां २
चनीरुचनी ॥ गचनी ॥ काकनी छकनी गुकनी चतु ४ यंच बत्सका छनवाकनी
नां लिजगदासिनीनां यथाययन्नान्नवल्लिगृह २ ममसिद्धिं कूर्चकुं ३ रुद्र स्वा
हा ॥ वल्लि ॥ यागिनी ॥ ३ ॥ ॐ ज्ञं यथासन यायू ॥ ॐ ज्ञं कूर्चं यीसिद्धिं वामं ॥ यथा

वृ॥ वलि॥ महामूडा॥ ४ ॥ जैजमूणासन वायू॥ जै नै नै गै गै गै ४ ॥ श्रीकृष्णग (६)
धनवायवायू॥ वलि॥ गजमूडा॥ गद्ययति॥ ४ ॥ जयसुख॥ जैजदवीयूरु विगर्भ
लवृषणिकुर्नकणयालं गिनर्ग यादवीयागिधीदेसकलरयदनीनकाचामू
लुकाश्या॥ नोमिथीविचिकर्षयनमसूखकन्यचकयमर्षच गद्यकयूजकाना
हनउरयगर्धसदायत्कवाठ॥ मूणगन्वादि यचवल्यार्चनवि (४) ॥ तत्सर्वं य
वियुर्धुमसु॥ ॥ विन्दुनागर्धर्ष॥ नूँवायू॥ ॥ गावूलादिमूख (६) धन ॥

नयर्धर्ष॥ जैजयितियगासनसुखरवरयदवलाखवामनकुमूर्ति चणीचणीगना
थायधगहृषिरुलाकयालारुधीला॥ यकानकासिदेया॥ यिरुगधसहि
ता॥ मागव॥ कणयाला यागिन्यायागयूका॥ सुलजलखचना॥ यानमगलिवनु
॥ यिवनुदवगासर्व सुनूसाधविनायका॥ यागिणीकणयालाध ममदहवव
हिता॥ जैजनम॥ श्रीनाथाय॥ जैजनम॥ श्रीसिद्धिनाथाय॥ नम॥ श्रीकृष्णगना
थाय वादुर्वायू॥ स्वीकानंकर्या॥ ७ ॥ नूगिर्यचवलि॥ ४ ॥ दवीविचिन्ना जैज

नन्ददवयायू॥ जयवमगुनू श्रीचर्यानिन्दवयायू॥ जयवममणीगुनू श्रीमिशनर
दवयायू॥ जहरे श्रीलिङ्गद्विरुद्यानकाययायू॥ जववलि॥ आवाहनादि
नूमूदीदर्यामि॥ ॐ तिलिङ्गद्वि॥ ॥ ततागुनूमधुलनवात्माद्यनन्यासकानय
॥ जै॥ जै॥ हृदयायनम॥ वायू॥ जै॥ गिनसस्वाहा वायू॥ जै॥ त्वेगिस्वायेवा
वट् वायू॥ जै॥ वकववायदू वायू॥ जै॥ जयनगुणयायवमट् वायू॥ जै॥ उन्मृता
यरुट् वायू॥ अननकनगुद्यादिकनन्यास॥ ॥ जै॥ हं गिस्वास्मानवायू॥ जै॥

गिन॥ स्मनवायू॥ जै॥ कललाटवायू॥ जै॥ मं वकायवायू॥ जै॥ तं हृदयाय वायू॥ जै॥
वैनाशोया॥ जै॥ वगुदया॥ जै॥ यं जानीयायू॥ जै॥ उं वाददययायू॥ ॐ गिनवात्मादह
न्यास॥ ॥ यूनधयूववत्तन्यासनवर्गन्यास॥ जै॥ हृदयायनम॥ वा॥
ॐ ह्यादिन॥ ॥ चक्रयूजन॥ त्रिकां॥ वदास॥ अर्धु॥ वासुयूगा॥ दानदाना॥
जै॥ मू॥ डाहायूजागुनूमधुनश्रीकृद्विकार्येयायू॥ त्रिकां॥ मक्षवसि॥ जै॥ मू॥ म
दायूजागुनूमधुलश्रीगकायवा॥ जै॥ वदासयूव॥ जै॥ मू॥ उयनमणीगुनूमधुलश्री

अंशींकीकूलयुगवदूकनाथययायू ॥ वायो ॥ अंशीमहाकोमानिकाविद्ययायू ॥
पूर्वदानादिदणलाकयान ॥ अहरे वा ॥ अंशानायेया ॥ ॥ शिकाधमध्या ॥ अंश
मासनयायू ॥ अंशवासनयायू ॥ ध्यानयुग्मंगृहीत्वा ॥ अंशमासनगवसूच दणव
कृशिलाचन ॥ स्ववर्धुचिमहादीर्घ सर्वलक्षसंयुतं ॥ स्ववर्धुपूर्ववकाकु दक्षिण
कृष्ण (गोरितं) ॥ उल्लवपीगवर्धुस्था लुद्धनकनडिहर्ग ॥ वकास्यदक्षिणधूमं
गमूकनभवच ॥ तदूर्ध्वपीगवर्धुच पीगस्यकृष्णदक्षिण ॥ वकामूकनमित्याहरे

दूर्ध्वधेगमूकमं ॥ अस्त्रादणयुर्जदुव कवचाहानरुबितं ॥ स्वप्ररुद्धवन्दवं लि
धूलंमकुशकथा ॥ मूर्धकामधुनूषं उमनूखद्वानभवच ॥ वाधधनू ॥ सूर्ययुक्त
यर्धुधधूम (गोरितं) ॥ चर्कचैवगदायाहि वनदारयहसर्क ॥ काद्यविन्दुधन
न्दवं नानालक्षनसारितं ॥ अंशपीगरवद्वर्धु मासनसूखसक्ति ॥ अंशवृष्यन
वात्मानं मधुलंगुनूमधुलं ॥ ध्यायतलुययूकात्मा दिव्यसिद्धनुमानवा ॥
तिक्ष्णविचित्रयुग्मयायू ॥ ॥ अंशहरेअनन्दगकिरेववानन्दवीनाधिय

[illegible][illegible]

मयचक्रया वलि ॥ ७ उक्तानूकया किंचित् सर्वं हृदयाय वा वलि ॥ ८ ॥
नवात्मारुहानकाय वृद्धं नैवर्द्यं गृह्णेश्वाहा ॥ ९ ॥ ८ ॥ ९ ॥
नकाय वलि गृह्णेश्वाहा ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
हा ॥ आवाहनादि ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥
कुंवीनमाहनीया ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥
यायू ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥

निमूडा ॥ १४ ॥ १४ ॥ १४ ॥ १४ ॥
थाय ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥
॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥ १६ ॥
॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥
॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥ १८ ॥
॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥ १९ ॥
॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥ २० ॥

आध्यात्मिक विद्यायां ॥ ध्यानाद्वर्कसिद्धिर्वाच ॥ काकनीविजयचक्रं ॥ उज्ज्वलचक्रं
 न्यासादि ॥ वाचाश्चैवमूलाद्वर्क ॥ उज्ज्वलसविनायकी ॥ नहिकर्मचिन्तनरुचि ॥ कम
 लाकूलदी ॥ वाचश्चैवनाश्चैवमूलाद्वर्क ॥ महानाविका ॥ काकुलाका ॥ कनाद्य
 गणयजयत् ॥ ॥ पूनवतिसिन्धुसंकाय ॥ धवक आसुत ॥ पंजजांजांझंझं
 जाकुश्चैवमूलवर्कदी ॥ मूमाद्यमहाधाय ॥ गगनविशुद्ध ॥ साधयश्चैवमूलवर्क
 सनयाद्रका ॥ वज्रमूल ॥ पंजझंझंमाहमूल ॥ धनीतज्जिनीचैवमूल ॥ सूर्य

[illegible]

कर्यात् ॥ त्रैलोक्यं भूँः कौस्तुभं सिद्धायै वा ददय वा दूकं यूजया मिष्टौ भूँः धीर्दोने ॥ ७ स्तु
मृदायै जानूदय वायू ॥ ७ स्तु विद्युतायै उन्नूदय वायू ॥ ७ स्तु लक्ष्मणायै वायू ॥ ७
स्तु दिकायै नारी वायू ॥ ७ स्तु मालिनी ददयाय वायू ॥ ७ स्तु गिवायै क (०) वायू ॥
७ स्तु वसुमन्त्रायै मुख वायू ॥ ७ स्तु नासायै नासायूट ददय वायू ॥ ७ स्तु कद्रु
कायै कर्ण ददय वायू ॥ ७ स्तु हृदयै हृदय वायू ॥ ७ स्तु मद्रुमयै गिनमया
यू ॥ ७ स्तु यवयवलि ॥ ॥ ७ स्तु ददगि न्यास ॥ ॥ यववाद्यनया गद (७)

कावर्णसमूहना ॥ एतु रैनववीजं च तस्या (७) दिकं कनू ॥ उद्धागं ययनन ल
नमृदाद (७) मृच ॥ द्वादश गंधन रुदन रुदिताय ययनन ॥ नाका ननाय मृत्पुष्ट न वि
ष्टु तस्य जायत ॥ सर्व वाधिविनिर्मूका नूयलाका हिसा यक ॥ द्वादश गंधन रुदन ॥ ॥
७ स्तु सर्वरूपा ददय यनम ॥ वायू ॥ ७ स्तु मृगता मा लिनी गि विता गि
नम स्यात् वायू ॥ ७ स्तु मृगवद्वदिनी मृता दिवो धाय गि स्वायै वायूट वायू ॥
॥ ७ स्तु वज्रि (७) वज्र धनाय स्वागु कवचाय दू वायू ॥ ७ स्तु गान्धानि ल्य मृग

गङ्गासहस्रनामस्तोत्राय वषट् पायूज ॥ ७ स्तु ८ नमस्तु नूनतः किं ह्येकं
 दाया पुण्यात्माय हसन्मयः कुरुद्रयायूज ॥ ७ स्तु ९ यावत्तु गन्तास्य ८ यायूज ॥
 उर्ववर्तिनः ॥ ॥ उर्ववर्त्तु गन्तास्य निमादिक सिद्धिर्दं ॥ न्यासस्तु ॥ ॥ ॥
 यत्तु गन्तास्य ८ ॥ ॥ गङ्गा मालिनी न्यास ॥ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नैनादिभ्यो निस्वाया यायू ॥
 ॐ ह्रीं गन्तास्य उर्ध्वनिनामालयां ३ ॥ मनाक्कवाहनिना ॥
 ॐ ह्रीं नैनिद्वययूवनिनामालयां ३ ॥ ॥ मनागवर्तिनः ॥

ॐ ह्रीं नैनिद्वययूवनिनामालयां ३ ॥	॥ मनागवर्तिनः ॥
ॐ ह्रीं विद्याय उर्ध्वनिनामालयां ३ ॥	॥ मनागवर्तिनः ॥
ॐ ह्रीं गङ्गा नैययिनिनामालयां ३ ॥	॥ कवाहनिना ॥
ॐ ह्रीं च चामुण्डाय रुगीयलाचन ३ ॥	॥ उर्ध्ववस्त्रया ॥
ॐ ह्रीं धर्मप्रियदर्शनी नगद्वया ३ ॥	॥ वदवाद्यादिवाचनजानडिहकन ॥
ॐ ह्रीं नानायदी कर्षुविवनया ४ ३ ॥	॥ श्रीगुलियकयनाम् ॥

ॐ अउ माहनी दकि धक कुरु खख ३ ॥	॥ हसुर्ग यनन ॥
ॐ अउ यज्ञार्थे वासक कुरु खख ३ ॥	॥ हसुर्ग यनन ॥
ॐ अउ गुरुग कि नाग यष्ट दय ३ ॥	॥ मूलाद गन वरवया ॥
ॐ अवव जि धी वकु यायू ३ ॥	॥ हसुर्ग यनन ॥
ॐ अक क कय ड द दय यायू ॥	॥ वरवया ॥ वाज द ग च तु द दय म धवा ॥
ॐ अख कालिका ये ड द द ग न य को यायू ॥	॥ वरवया ॥

ॐ अ ग विवाये श्रु (धा) द ग न य को यायू ॥	॥ वरवया ॥
ॐ अ द घा वा ये ड द द्रि यायू ॥	॥ ॥ थ थू कू थू सि ॥
ॐ अ द विवाये श्रु द्रि द्रि यायू ॥	॥ का थू कू थू सि ॥
ॐ अ नू मायाये जि द्रा या यायू ॥	॥ वरवया ॥
ॐ अ नू वा (ग) थू ये वा चा या यायू ॥	॥ स ध न न ॥
ॐ अ व जि विवाये क (ध) यायू ॥	॥ धा द न न ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीं नमो ॥
 ॥ श्रीं नमो ॥
 ॥
 ॥
 ॥ विन्दुना ॥
 ॥ समुद्रस्य धूलनात् ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ समुद्रस्य धूलनात् ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥
 ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ असे सर्वस्माये द किं दया ध्वं यायू ॥
 ॐ अम्रं ॐ क्का गन्धो वामया ध्वं यायू ॥
 ॐ अक्कं क्का गली द कस्तन यायू ॥
 ॐ अलं यूतनाये वामस्तन यायू ॥
 ॐ अम्रं अम्रा माह्ये यया दय यायू ॥
 ॐ अमं लम्बादनी उदय यायू ॥

॥ जववीका ॥
 ॥ खववीका ॥
 ॥ कृष्णमधुलु ग्रामनाम् ॥
 ॥ कृष्णमधुलु ग्रामनाम् ॥
 ॥ चूचकस्यर्गनाम् ॥
 ॥ घात ॥

ॐ अकं सदा विधीनारी मध्व यायू ॥
 ॐ अमं महाकाल्ये नितम्ब यायू ॥
 ॐ अं कस्तूमायू धाये यायू ॥
 ॐ अम्रं शुकादवी शुका यायू ॥
 ॐ अमं तानादवी उदय यायू ॥
 ॐ अं कस्तूमायू धाये यायू ॥

॥ ग्रामनाम् ॥
 ॥ शुक् ॥
 ॥ लिङ्ग ॥
 ॥ मृगुया ॥ वरवया ॥
 ॥ खननगुलि ॥
 ॥ चन्द्रविन्दूनादलिखनन ॥

ॐ अं नै कियये वाम जानू निपायू ॥
 ॐ अं डं गायत्री दक्षुर्दं घायायायू ॥
 ॐ अं डं सा विशी वामर्दं घायायायू ॥
 ॐ अं दं दहनी दक्षि दं घायायायू ॥
 ॐ अं रुं रुक्मा विधी वाम दं घायायू ॥
 ॐ अं रुं मालिनी रुद्रा वि काये यूर्ययायू ॥

॥ चन्द्र विन्दू नाद निखनन ॥
 ॥ जव कुं कुं ॥
 ॥ खय कुं कुं ॥ नखया ॥
 ॥ नखया ॥
 ॥ यी कुं नात् ॥
 ॥ यी कुं नात् ॥ ॥ यथा वक्षि समूह

नै शुक्का वृक्षे दहनी ॥ तथ सर्व विद्याया वि मालिनी दहनी कक्षात् ॥ न्यास रु
 त्वा ॥ ॥ ॐ ति मालिनी न्यास ॥ ॥ ॥ तता षट् वंसी न्यास कावयत् ॥
 ॐ अं श्रीं कुं कुं श्रीं श्रीं कक्षु ललाट यायू ॥
 ॐ अं श्रीं नन मधुल वकु यायू ॥
 ॐ अं ॐ सुक्मी षट् दक्षि दं नग यायू ॥
 ॐ अं ॐ श्रीं मुक्ति वाम नग यायू ॥

॥ रुद्र रं यनन ॥
 ॥ गह दायू पूट दि लावन रं जिवन
 ॥ डं डिक न (ह) ॥

यथा ॥

ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥

॥ विवधं गुरु लिख्यते ॥
 ॥ पूर्ववत् ॥
 ॥ मूलदशान्नवव्या ॥
 ॥ पूर्ववत् ॥
 ॥ हस्तस्यर्धनात् ॥
 ॥ हस्तस्यर्धनात् ॥

ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥
 ॐ ॐ मलीनदकक (ह्र) यायू ॥

॥ नखया ॥
 ॥ नखया ॥
 ॥ म (ध) स्यर्धनत् ॥
 ॥ म (ध) स्यर्धनत् ॥
 ॥ विन्दूदयत् ॥
 ॥ नखया ॥

ॐ अकं काधदकस्कं ध्यायू	॥	॥ अववाहान ॥
ॐ अखं चतुदकिधवाद्रुद ध्यायू	॥	॥
ॐ अगं यचतुदकसु ध्यायू	॥	॥ कंक (ह) ॥
ॐ अघं शिवदकसु ध्यायू	॥	॥ विन्दुना ॥
ॐ अठं एकनूयदकिधकनीगुलिननकयू ध्यायू	॥	॥ समूखस्य धलूनात् ॥
ॐ अचं कर्मवामस्कं ध्यायू	॥	॥ खववाहान ॥

ॐ अकं एकनयवामवाद्रुद ध्यायू	॥	
ॐ अठं चतुर्मूखवामसु महिर्वधे ध्यायू	॥	॥ कंक (ह) ॥
ॐ अगं भूजसवामसु ध्यायू	॥	॥ विन्दुना ॥
ॐ अउं शमीशवामकनीगुलिनखयू ध्यायू	॥	॥ समूयस्य धलूनात् ॥
ॐ अटं सामध्वनदकिधसिचि ध्यायू	॥	॥
ॐ अ० लीगलीशदकिधानी ध्यायू	॥	॥ नखया ॥

ॐ अं उं शं नूक दक्षिण जानीयायू ॥	॥ जवया ॥
ॐ अं रुं नूद्वनानीषदकडं धयायू ॥	॥ जवकं ॥
ॐ अं हं उमाकान्क दकयादां गुलिनखयू यायू ॥	॥
ॐ अं तं मूगादीषवाम रिषि यायू ॥	॥
ॐ अं थं दिष्ठिवामानीयायू ॥	॥ खवखन ॥
ॐ अं दं धागित्वाम जानीयायू ॥	॥ चतुर्न विन्दूनाद लिखनन ॥

ॐ अं थं मीनवामडं धयायू ॥	॥ खवकं ॥
ॐ अं नं मययादां गुलिनखयू यायू ॥	॥
ॐ अं यं लाहित दक्षिण याध्वयायू ॥	॥
ॐ अं रुं गिखीसवाम याध्वयायू ॥	॥
ॐ अं वं कुगलं उयुष्वं णयायू ॥	॥ स्वायात ॥
ॐ अं रुं द्विनं नारिमधयायू ॥	॥ अमदा ॥

ॐ अममहाकालद्विमध्ययायू ॥	॥
ॐ अयैवालिगत्वविमध्ययायू ॥	॥ लिगयाद्वन ॥
ॐ अवैरुजंगनकायायू ॥	॥ लिगयानस ॥
ॐ अलैयिनाकमासयायू ॥	॥ यनवा ॥
ॐ अवैरुजंगनकायायू ॥	॥ कधूस ॥
ॐ अहंवकानन्दश्रुतिमध्ययायू ॥	॥ दंताउ ॥

ॐ अयैवैवातन्मज्जियांवायुजसूत ॥	॥
ॐ असैरुगुगुकायायू ॥	॥ वीजवन्नूवदात ॥
ॐ अहलाकनिषायायायू ॥	॥ ददि ॥
ॐ अकसैवर्तिकाववादांगुष्ठगंधिमध्ययायू ॥	॥ नयतालकमध्यया ॥
ॐ अकसैवर्तिकाववादांगुष्ठगंधिमध्ययायू ॥	॥ यूजावल्यावाहनादि ॥
॥ ॐ अकसैवर्तिकाववादांगुष्ठगंधिमध्ययायू ॥	॥ अमिमादिगुधागस्य यमासासंरुवनि

ॐ अममहाकालद्विमध्ययायू

ॐ निखादूती निखायां वायू ॥ ॐ ॐ डला लिय सिमटि आसर्वदूर विसर्गदि नूनि
नी आसि डलखि आसर्वदूर लखि आधी कवचदूती कवच वायू ॥
ॐ ॐ नकनक मलानक चामू ॐ धनि अवातन श्वाहा पीनरदूतिनरदय वायू ॥
ॐ ॐ गुधकृदिक दूरुट् ममसर्वयिडवान् सयल मलुगलु चरुययागादिकान्
यनकान् कानयितान कनिष्पनि कर्बनि षतिता नूनिनदन २ डडु कवालि
ॐ ॐ दूरुट् गुधकृदिक ग्री अरुदूती अरुवाय वायू ॥ ॐ ॐ सैर वपूतिरुदनि

कार्ये वायू ॥ यूजावलि आवाहन ॥ ॥ ददयादिनां रूलं च ॥ गगुर्वा रयना हि
नी ॥ मलुसिद्धिरुलं दगा सर्वयायकयकनी ॥ माहनी सर्वगला हि स्ववादयादिना
नद ॥ स्वगला सर्वयाधका सर्वयूधविमर्दनी ॥ न्यासरुल ॥ ॐ तिअं पुर्तिन्यास ॥
॥ ॥ गगानत्तयधैक न्यास ॥ ॐ ॐ वा (गधनी) नूतन गगनलाक राग गगर्गमिदी
गगललाक अमृतसर्धनवी गगलानन्द दव गगनास्वाचरु ४ वषिलककाटि सिद्ध
चरु ४ वषिलककाटि यागिनी वायू ॥ ललाट ॥ ॐ ॐ मायये नूतन स्वर्गलाक रा

गगरुगामिनीस्वर्गलाकश्रुतसंचाविधीस्वर्गतिन्दयवस्वर्गस्वातोगलंकका
टि सिद्धवर्गिलककाटिथागिनीयायू॥ नासिकावका॥ ॐॐमाहनीपूनत्तयंचक
लाकशगगरुगामिनीयवनलाकश्रुतसंचाविधीयवनानन्दयवयवनाम्ना
याउलककाटिसिद्धयाउलककाटिथागिनीयायू॥ ॥ कं०॥ ॐॐज्ञानयेसू
नत्तमर्त्यलाकशगगरुगामिनीमर्त्यलाकश्रुतसंचाविधीमर्त्यतिन्दयवमर्त्यम्ना
श्रुलककाटिसिद्धश्रुलकयागिनीयायू॥ द्वादश॥ ॐॐजीगयेगीनूत्तनाग

लाकशगगरुगामिनीनागलाकश्रुतसंचाविधीनागानन्दयवनागम्नाचखा
निलककाटिसिद्धचखानिलककाटिथागिनीयायू॥ नारिम॥ ॐॐजीपून्
त्तवून्नीलश्रुतकलाकशगगरुगामिनीश्रुतकलाकश्रुतसंचानधीश्रुतका
नन्दयवश्रुतकाम्नाश्रुतकलककाटिसिद्धश्रुतकलककाटिथागिनीयायू॥
मूर्ध्निस्तन॥ ॐ॥ ॐॐहैतैतयूजावलिआवाहनादि॥ ॥ गगणादिसम
सूयुयुवनवायितरुल॥ यातकनागिगसर्व॥ लरुगना॥ ॐॐ॥ ॐॐ॥

रुल ॥ नूतिननयचकी न्यास ४॥ ॥ अथ गंधि न्यास ४॥ वैजं हं नूतिननय ॥ त्रिधा ददय
याद्रुकां ॥ या २ ॥ वैजं हं कालगन्धि ॥ गुल्फद्वय ३ ॥ गुधि २ ॥ वैजं हं दिनूदयन्ति ॥ जं घादय ३
॥ चूचू ॥ वैजं हं वामगन्धि कटिद्वय ३ ॥ यनयाय २ ॥ वैजं हं कामगन्धि लिङ्ग
३ ॥ लिंग ॥ वैजं हं विष्णुगन्धि मधुस्तन ३ ॥ गुद ॥ वैजं हं वक्रगन्धि वक्रस्त
न ३ ॥ चर्मयाल ॥ वैजं हं सूर्यगन्धि नारिमध्य ३ ॥ नारिमध्य ॥ वैजं हं नामग
न्धि नारी ३ ॥ नारी ॥ वैजं हं बाधगन्धि उदन ३ ॥ घात ॥ वैजं हं उद्विगन्धि ददय ३

ददय ॥ वैजं हं विष्णुगन्धि क ३ ॥ कथू ॥ वैजं हं नूदयन्ति ॥ गालस ३ ॥ थक्का ॥
वैजं हं नूतिननयगन्धि गिनस्तन ३ ॥ गिन ॥ वैजं हं सदागिवगन्धि मूर्ध्निस्तन ३ ॥ दूता ॥
नूतिगन्धि न्यासरुहालिकायवलिगृह्ण २ ॥ नूतिगंधि न्यास ४ ॥ ॥ उदयार्क
निरीक्षाय दीयमानास्तु ॥ सुनल नगर ॥ नूतिगंधि न्यास ४ ॥ ॥ उदयार्क
सुननगन्धि न्यासन सुमनल यम ३ ॥ वचसिदि ३ ॥ नकार ॥ नकार ॥
तवारुव ॥ नूति न्यास रुल ४ ॥ ॥ ॥ वैजं हं नारायणद्वय ॥ यायू ॥

य न
 ययनययनिवर्तनीनां दुं उद्वया ३॥ जै ७ सर्वसत्त्ववशवाननाकायनान्मलघसम
 रुकर्मयवर्तनीनां दुं यानी ३॥ जै ७ सर्वमारुगुक्कदययनमसिद्धिं नालगंधु ३
 ॥ जै ७ यनकर्मकुदनकनसं सिद्धिकनसं सिद्धिकनरुगुक्क ३॥ जै ७ मारुहो वचन
 गुरुकुलि (गु ३॥ वृत्तिनूदरवधु न्यासायवलिगृह २ स्वादा ॥ ॥ ततामारुहवधुन्या
 स ॥ ददि ॥ जै ७ अश्वानश्रुमाधवनद विमल श्रीवक्त्राय विविध ३॥ क ७ ॥ जै ७ अश्व
 धानश्रुमाधवनद विमल श्रीमादधनी विधु ३॥ तालू ॥ जै ७ अश्वानश्रुमाधवन

दविमल श्रीकामानी विधु ३॥ वकु ॥ जै ७ अश्वानश्रुमाधवनद विमल श्रीवैष्णवी वि
 धु ३॥ नासिकायां ॥ जै ७ अश्वानश्रुमाधवनद विमल श्रीवानादी विधु ३॥ दाताल ॥ जै
 ७ अश्वानश्रुमाधवनद विमल श्रीलूयादी विधु ३॥ विन्दुस्थान ॥ जै ७ अश्वानश्रुमाध
 वनद विमल श्रीचामूठा विधु ३॥ जै ७ अश्वानश्रुमाधवनद विमल श्रीमहालक्ष्मी विधु ३॥
 गिला विमल ॥ वृत्तिमारुहवधु न्यासायवलिगृह २ स्वादा ॥ ॥ ततामलुखवधुन्यास
 ॥ जै ७ नमश्चामूठा यदुल्ललाट ३॥ जै ७ उर्ध्वकोशिरुं क ७ ३॥ जै ७ दालितक गिरुं मि

सुनीयावू ॥ ७ ॥ अथै प्रसवजन
जना अथै प्रसव
नीयावू ॥ ७ ॥ अथै प्रसवजन
वर्नि ॥ अथै प्रसव
एववलि ॥ अथै प्रसव
जा ॥ अथै प्रसव

[illegible]

श्रीं नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ उं उं चतुर्थे वायु ॥
 ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ उं उं चतुर्थे वायु ॥ ॐ उं उं चतुर्थे वायु ॥
 ॥ ॐ उं उं चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥
 ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥
 ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥
 ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥
 ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥

सिद्धिचामुत्तयेवलिगृहं २ स्वाहा ॥ श्रीवाहनचतुर्थादि ॥ यानिमुर्जादयः
 मि ॥ विन्दुदत्त ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॥ ततोवागीश्वरीयुजा ॥ ॐ नमः
 द्यासनवायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥
 ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥
 ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥
 ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥
 ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥ ॐ नमः चतुर्थे वायु ॥

हनादिथानिमूर्खं दण्डयत् ॥ विन्दुदद्यात् ॥ ॐ गिवागीश्वरीयूजनविधिः ॥
॥ ॥ अथक्रममधुलाघर्षेण ॥ चक्राद्यानो ॥ ॐ शुभं वाक्कञ्जसं गिरितयनि
यूतनागयद्याकृकार्णं द्वीवाक्षवातुहानं जलजदलयूतं रूतवृत्ता ॥ शुभं वासं
घानायघानकार्णं यिरुवनवियिनंसंदृताः द्वीक्यूकं कार्वक्षरुतिमाला
सुकलयनिवर्णं वायतमधकृद्धीम् ॥ ॥ ॐ ॐ श्रीधनं कययायूज ॥ ॐ
शूनकासनाययायूज ॥ ॐ सुधुयया ॥ ॐ नालायया ॥ ॐ ययायया ॥

जयशायया ॥ ॐ कर्णनय ४ यायू ॥ ॐ कर्णिकायया ॥ ॐ चन्द्रमधुला
 धियतयवद्वयतासनाययायू ॥ ॐ सूर्यमधुलाधियतयविष्णुयतासनाययायू ॥
 ॐ अग्निमधुलाधियतयनूद्यतासनाययायू ॥ ॐ साममधुलाधियतयव्ही
 धनयतासनाययायू ॥ ॐ भाकिमधुलायसदाशिवयतासनाययायू ॥
 ॐ र्यचयतासनाययायू ॥ नमः ४ श्रीगुनूवीनयागिनीत्य ४ यायू ॥ ॐ ॐ म्
 यवर्षीयवाल्मीकीदवीमहादेव ४ ॐ याल्मीकीकृतयू ॥ ॐ श्रीठाठियानमहामूज

वी० श्री डाठिया माधवी श्री डाठिया सुनाथ देव श्री नकामाधवी श्री आधानि
भानन्द देव कृकानिमलना निकावृक श्री कदम्बरक श्री डय गिनिपर्वत श्री
वदकनाथ कणयाल विष्णु श्री कृडि कानन्द देव ३॥ दक्षि॥ ॐ श्री चन्द्र
दीयरीमलामाधवी शुभकणयाल ॐ श्री शतायुग श्री जालन्धर महामू
डायी ० श्री जालामाधवी श्री जालिसुनाथ देव श्री कनालामाधवी श्री कूर्वगी
भानन्द देव श्री कृकालीमलना निकावृक श्री कीनवरक श्री हिमगिनीपर्वत

श्री जमदगु कणयाल देव श्री कृडि कानन्द देव ३॥ वाम॥ ॐ श्री जव
दीयकलनीयवी श्री गोयाल कणयाल ॐ श्री दायनयुग श्री वृष्टिगिनी
महामूडायी ० श्री पूष्टिमाधवी श्री पूष्टिसुनाथ देव श्री चन्द्राकामाधवी श्री
चक्रि भानन्द देव श्री कृकानिमलना निकावृक श्री चिचिनीवरक श्री सुखल गि
नीपर्वत श्री विमल कणयाल वृष्टि श्री कृडि कानन्द देव ३॥ श्रृ॥ ॐ श्री
ॐ श्री नलदीपधर्मिणी श्री महाकाल कणयाल ॐ श्री कलियूग श्री कामवृष्ट

महामूढायी० श्रीकामविजयान्नाथदी श्रीकामीगनाथयव श्रीमहाकुष्माभाद
वी श्रीमदधीगानन्दयव श्रीकृष्णानिमलनाविकाटकश्रीविल्ववृक्षश्रीशामुनि
नीयवृत्तश्रीवज्रदधुकरयाल नूपातीत श्रीकृष्णिकानन्दयव ३॥ यस्मिन् ॥ जे
जम्बू श्रीमहानन्ददीयधर्मादवी श्रीमहाकालकरयाल श्रीश्रवतनयूगश्री
महा यनायनयी० श्रीचण्डीगनाथयव श्रीमर्तगित्यम्बादवी श्रीमर्तगीगान
न्दयव श्रीकृष्णानिमलनाविकाटक श्रीयानिजागट्टक श्रृष्टावली श्रीमन्नगिनि

यवृत्त श्रीविजयानाथकरयाल श्रीसर्वव्यापिधूर्न्नीनाद्यादिता श्रीकृष्णिकानन्द
यव ३॥ यनायन ॥ म० ॥ त्रिकाव्यापितयवृक्षयी० ॥ म० ॥ जेजम्बू
तनयी० श्रीकृष्णिकार्ये ३॥ नेमय ॥ जेज श्रीगेलवयी० श्रीवृक्षार्ये ३॥ वायू
य ॥ जेज श्रीमहानन्दवी० श्रीमहानाविकार्ये ३॥ यवृक्ष ॥ जेज श्रीकेलासयी० श्री
कमलार्ये ३॥ चण्डिका ॥ ४॥ जेज श्रीनादिविमल श्रीमातृये ३॥ जेज श्रीसर्वज्ञ
विमल श्रीयूलिये ३॥ जेज श्रीयागविमल श्रीसवये ३॥ जेज सिद्धिविमल श्रीचम्य

यमहायूनी श्रुत्व हिसानन्द दव ३ ॥ जै ७ यं यं यं यं ललाट यक नियूनी कोलि
नानन्द दव ३ ॥ यकन स हि न स यू ॥ ६ ॥ जै ७ श्री मनु गाये वाद का ॥ जै
७ श्री चन्द्रि नो ३ ॥ जै ७ श्री विद्युत् माये ३ ॥ जै ७ श्री विज्ञताये ३ ॥ जै ७ श्री धावि नो
३ ॥ जै ७ सूकताये ३ ॥ जै ७ श्री निमहाये ३ ॥ जै ७ श्री निर्विकानाये ३ ॥ जै ७ श्री
निनाल माये ३ ॥ जै ७ श्री निन उडनाये ३ ॥ जै ७ श्री सामाये ३ ॥ जै ७ श्री महावलाये ३
॥ जै ७ श्री वाधवये ३ ॥ जै ७ श्री वाधये ३ ॥ जै ७ श्री लीलाये ३ ॥ जै ७ श्री लालये ३

॥ जै ७ लाये ३ ॥ जै ७ श्री नितामये ३ ॥ विषुद्व ४ पूर्व का ॥ हठ नैसहा लु श्रुना हता
मनियू न क वायवा स्वाधिसानन्दु ० ० ॥ श्राधानमग्निका ॥ हठ श्राद्धावधि
मठचात ॥ म ॥ जै ७ श्री कडि काये कडि कानन्द दव वाद का ॥ पूर्व ॥ जै ७ श्री
मिगाये मिगानन्द दव ३ ॥ दकि ॥ जै ७ श्री चयाये चयानन्द दव ३ ॥ डहन ॥
जै ७ श्री बयाये बयानन्द दव ३ ॥ यचिम ॥ जै ७ श्री डायाये डायानन्द दव ३ ॥
चउर्क ॥ जै ७ श्री श्रुल्लये श्रादिसानन्द दव ३ ॥ जै ७ कलाये श्रुनानन्द दव ३ ॥

जै० श्री गिरिवाये श्री विगतानन्द यव ३ ॥ जै० श्री मिशये श्री वगानानन्द यव ३ ॥ जै० श्री
काकवाये श्री ज्ञानन्द यव ३ ॥ ॐ ति श्री कलादिय चैरक ॥ ॥ जै० श्री ॐ च्छाये रुद्र
कर्म यव यादूकी ॥ जै० श्री ज्ञानाये मध्य कर्म यव ३ ॥ जै० श्री क्रियाये श्री बाल
कर्म यव ३ ॥ जै० श्री कृदिकाये श्री डालिनाथ यव ३ ॥ ॐ ति ॐ च्छादिय चैरक
॥ ॥ चतुर्की यचैरक यद्वं चतुर्की यचैरक यद्वं ॥ ॐ ति श्री विगतिकर्म २४ ॥
श्री वाक् ॥ मूलमकुट संनिधान सन्निधान मकुट सकलीकनन साक्षात् या

ज्ञमूला ॥ ॥ वृषध्यान ॥ वाद्यार्घ्यचमन ॥ अर्थगण ॥ उद्धर्तन ॥ रसुन ॥ स्नान ॥
श्रुति स्नान ॥ विलयन ॥ वस्तुन काव यादूकी यद्वं यामि ॥ जै० श्री यादूकी ॥ श्री
गि ॥ ॐ च्छादि मकुट ॐ गान तेजस्य वायु यद्वं यद्वं ॥ मध्य ॐ समूलन
संयुक्त ॥ जै० किं वि २ विद्वका कनाये ५ ॥ श्री लाय रुद्र ॥ ॐ च्छादि मकुट य
उद्धिक्त संयुक्त ॥ मध्य ॥ श्री रुद्र यद्वं ॥ २ ॥ श्री चमन ॥ मूर्धा ॥ ललाट ॥ जै० श्री
वर्ग श्री ललाट यया ॥ श्री लाय वस्तुन सर्वमकुटाय वेधाय ॐ च्छादि क

ये अकरे नव पादकां ॥ मुख ॥ ॐ ज क व (र्ग ४) मूखवाना वस्यां ॐ लाये मादध
ये चविकाये (गुहिनो मू) (मये कडिकाये ॐ करे नव ३ ॥ क (४) ॥ ॐ ज च व (र्ग ४)
क (४) कालायुया उदा ये कामाये यागाये केवर्तिकाये जाम्याये कडिकाये
उकरे नव ३ ॥ ददि ॥ ॐ ज ट व (र्ग ४) ददि अफला (४) ज वाये वेवूये हनसिध
बटके नेमत्याये कडिकाये अकरे नव ३ ॥ नाली ॥ ॐ ज त व (र्ग ४) नाली जय
त्या (४) वाये वानाये रुदानिकाये कन्दूके वानू (४) कडिकाये उकरे नव ३ ॥

गुध ॥ ॐ ज य व (र्ग ४) गुध चनी जे नानो ॐ लाये किलिकिलाये नजके वा
यूयाये कडिकाये उकरे नव ३ ॥ जानू ॥ ॐ ज य व (र्ग ४) जानाने कासकडो
वाये चामूठ्याये कालनाये कियिकाये कोवर्तिकाये उकरे नव ३ ॥
याद ॥ ॐ ज ष व (र्ग ४) याद यादवी काष्ट अ ४ लाये महालक्ष्मी रीव (४) कोषध
ॐ नानो कडिकाये अकरे नव ३ ॥ ८ ॥ अत कुट्टय २ ॥ अचमन ॥ मूडा ॥ मूल
न ॥ ॐ ज णी ग ग णानन्द दव पादकां ॥ म (४) ॥ ॐ ज णी कू मूदानन्द दव ३ ॥ ॐ ज

शीघ्रानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीरुचवानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीदवानन्ददव ३ ॥
ज श्रीकमलानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीगिवानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीवामानन्ददव
३ ॥ जै ज श्रीकृष्णानन्ददव ३ ॥ अष्टष्ट (इ न व ना धन पूषादि ऋ गाना न
संयुक्त ॥ ॥ अष्टकूटद्वय ॥ आचमन ॥ मूजा ॥ मूलमनु ॥ ॥ जै ज श्री
सूर्यानन्ददव यादव ॥ जै ज श्रीगीवानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीरुचवानन्ददव ३ ॥
जै ज श्रीगर्भमूकानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीसिद्धानन्ददव ३ ॥ जै श्रीजयानन्दद

व ३ ॥ जै ज श्रीविजयानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीमिथानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीभूषानन्द
दव ३ ॥ जै ज श्रीविमलानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीरुचवानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीमूजा
नन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीनन्तानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीकृष्णवानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीश्रु
मृगानन्ददव ३ ॥ जै ज श्रीगणानन्ददव ३ ॥ पूषादि ऋ गाना न वा उ ष य ण
संयुक्त ॥ म (ध) ॥ अष्टकूटद्वय ॥ आचमन ॥ मूजा ॥ ॥ पूर्वदलवीतयुष्य ॥
जै ज श्रीश्रुकलायैखरानन्ददव यादव ॥ जै ज श्रीकलायैमिथानन्ददव ३ ॥ जै ज श्री

ॐ यादुकां॥ जादुदयाय नमः॥ ॐ ह्यादिषु उक्तं न संयुज्ज ॥ मूलनवलि ॥ जैज
समस्तमनुष्या ॥ ० सिंहासनयी ० यी ॥ ० ययी ० कणाय कणसन्दाहदिव
सिद्धि समय चक यादुकां॥ उक्तानूकय किंचित् सर्वदयाय यादुकां
वलि गृह २ स्वाहा॥ आवाह (धनूयानि ॥ विन्दुगय ३ ॥ ॐ तिथीय किमश्नान
क्षेत्र आनाय श्रीकृष्णिकाय याये अष्टाविंशतिकर्म चिन्तितमार्ग ॥ ॥
तगा विरवधुयुजा ॥ जैज नमो गवति नूदाय रुं नमः॥ जैज नमो धामू ॥

य रुं नमः॥ जैज नमो वाकाशमा विनां रुं नमः॥ जैज सर्वसायतिनां रुं नमः॥
॥ जैज अनामनिनां रुं नमः॥ जैज नमो सर्वकामार्थसाधकानां रुं नमः॥ जैज अ
जनामनिनां रुं नमः॥ जैज सर्वगायतिनां रुं नमः॥ जैज खनूययननूय
यनिवर्तनीनां रुं नमः॥ जैज सर्वसत्त्ववसाकनना कृदनात्मनः समस्तकर्म
यवर्तनीनां रुं नमः॥ जैज सर्वमार्गगुह्यदयाय नमः सिद्ध रुं नमः॥ जैज य
वकर्म कृदनीकनसिद्धि कन रुं नमः॥ जैज मार्गनां वचनगुरु रुं नमः॥ ॐ ति

ॐ ॐ छिन्द २० नमः ॥ ॐ ॐ गीजिवनि २० नमः ॥ ॐ ॐ हीनि २० नमः ॥ ॐ ॐ
गानि (गानि) २० नमः ॥ ॐ ॐ स्तुति ॥ श्री गुरुदेव गुरुमा गुरुदेव गुरुमा गुरुदेव गुरुमा गुरुदेव
निकाये ३ ॥ शिवा ॥ यत्तु ॥ श्री वलि ॥ श्री वाक् ॥ शिवा गुरुमा ॥ ॐ शिवा गुरुमा
युगा ॥ ॥ गगामूलकाननदवा ॥ ॐ ॐ श्री वाक् गगामूलकाननदवा ॥ ॐ ॐ चन्द्रमस
लाघिकय उक्त यतासनाय यादका ॥ ॐ ॐ सूर्यमसुलाघिकय विष्णु यतासना
य ३ ॥ ॐ ॐ श्रीमसुलाघिकय गुरु यतासनाय ३ ॥ ॐ ॐ उक्तमसुलाघिकय

ॐ श्री गुरुदेव यतासनाय ३ ॥ ॐ ॐ गगामूलकाननदवा ॥ ॐ ॐ श्री वाक् गगामूलकाननदवा ॥ ॐ ॐ चन्द्रमस
लाघिकय उक्त यतासनाय यादका ॥ ॐ ॐ सूर्यमसुलाघिकय विष्णु यतासना
य ३ ॥ ॐ ॐ श्रीमसुलाघिकय गुरु यतासनाय ३ ॥ ॐ ॐ उक्तमसुलाघिकय
ॐ श्री गुरुदेव यतासनाय ३ ॥ ॐ ॐ गगामूलकाननदवा ॥ ॐ ॐ श्री वाक् गगामूलकाननदवा ॥ ॐ ॐ चन्द्रमस
लाघिकय उक्त यतासनाय यादका ॥ ॐ ॐ सूर्यमसुलाघिकय विष्णु यतासना
य ३ ॥ ॐ ॐ श्रीमसुलाघिकय गुरु यतासनाय ३ ॥ ॐ ॐ उक्तमसुलाघिकय

वदूकवलि॥ जै० गंगी गंगूकलग (षष्ठनायवलिगृह्ण २ स्वाहा॥ गद्ययतिवलि॥ जै०
यकचिगुयूववत्॥ यागिनीवलि॥ ॥ गतादुकादिवलिदानं॥ जै० अश्राव
००० डडजसृ००० चतुडाडोर्नूअंअवर्णयूवयी० भविकानदुकाकमहारेनवा
यभगानाधियतय स्वधकिसुहिताय स्वयनिवानाय न्मयूय धूयदीय नू
लिवलियलतनगृह्ण २ ममभगुन नाभय २ सर्वार्थसिद्धि ददस्वमद्रूवलिगृह्ण २
स्वाहा॥ यूव॥ तथेवसर्वार्थ॥ १ ॥ जै० कवगद्यद कवर्ण नूप्रययी० भविका

न सियुनाककमहारेनवाय महाभगानाधियतय स्वधकिसुहिताय स्वयनि
वानाय नूस्मदादीनां सर्वार्थानि कुरु २ वलिगृह्ण २ स्वाहा॥ नू० ॥ तथेवादि
यवर्षा॥ २ ॥ जै० चक्रजगत् ७३ चवर्ण याम्ययी० भविकान नूप्रिवतालमहा
रेनवाय (षष्ठयूववत्॥ दक्षि०॥ ३ ॥ जै० ८० उरुधवर्ण नूजत्ययी० भवि
कान नूमिजीकामहारेनवाय (षष्ठयूववत्॥ ४ ॥ जै० तथदधनतवर्णवावूय
यी० भविकान कानाकमहारेनवाय (षष्ठयूववत्॥ ५ ॥ जै० यरुवरुमयव

[illegible][illegible]

क४ कणयालाय या७ ॥ उर्ववलि ॥ अ॥ ॥ ॐ मयूनासुनया७ ॥ ॐ श्रीं क्रीं
 कूलयूगति ॥ उर्ववलि ॥ दक्षि ॥ ॐ मूसासुनया७ ॥ ॐ गं गीं गूं मित्यादि ॥ उर्व
 वलिवाम ॥ ॥ आवाहनादि सुखमूडा ॥ ॥ मध्यदविदूजा ॥ ॐ हंसासुन
 दियो ॥ ॐ श्रीवक्त्रादीविधया ॥ तथैव कर्त्तृर्दयं र्गं माह ध्वयादि ॥ उर्ववलि
 ॥ मध्य ॥ ॐ आधनादि ॥ मयूनासुनार्क ॥ ॥ धार्नवा ॥ ॐ चक्रजप ॥ ॐ कोक्कु
 क्रीं गीं मलाकीमानीविधया ॥ शुर्जलि ॥ कादययादि ७ ॥ ॥ शु

द्वां स्यं या ॥ उर्ववलि ॥ थानिमूडां ॥ ॥ तत४ स्वकणयालवद्रकगणयति ॥
 ॐ ॐ ॐ मलाकालायवलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ श्रीसिद्धिचाम
 धुं धुं धुं लि ॥ ॐ मलाकवनीनभगानाधियगत्यवलि गृ ५ ॐ ॐ ॐ स्वाहा ॥
 ॐ सर्वथादवथावलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ सर्वथास्तथावलि गृह्ण २ स्वाहा ॥
 ॐ सर्वथां नागथावलि ॥ ॐ सर्वथायकनाकसस्तुतयत विभाच किन्नर
 गणथावलि गृह्ण २ स्वाहा ॥ ॐ सर्वथा४ यवतवृक गणथावलि ॥ ॐ सर्वथा

[illegible][illegible]

नवीनरत्नवर्णः। गृहाधवीनवीनगि, सिद्धीनवर्गदायकः॥ मादनी॥ कास्मीनक
चिन्ताय, मादनीकजालयरा। गृहाधवीनयागस्य, रुर्लयायथमम॥ अकृत॥
अकृतं सर्ववीनर्ण, वीनराववनययं। सर्वमंगलदायकं गृहाधवनमध्वनि॥
जजाम॥ उयवीनमिदवीन भद्रकणस्यलङ्कितः। गृहाधवीनयागस्य, रुर्लयाय
वयनमम॥ मालुखान॥ मालुनानाविधविर्ग, वधुसोवस्यनिरुर्ग, जलायुलात्म
कंदवी गृहाधवीनरुलायय॥ नेवद्य॥ अन्नमदानसदिवा नसे४ वदिसमन्ति

नं। मयानिददितां दुर्ग, गृहाधवनमध्वनी॥ रुलादि॥ रुर्लरुलादितामूल
मिककलादिसर्व४॥ अमुजदिसयकान्न, जाम्बीनादियुग्यता॥ तदुर्ल
कयदीदकि, धन। वामनार्थयागनवित्दयक॥ अयचवलिरुदान॥ ॥
जाय॥ जैजकां ३ कणय॥ ज. धीजोवद्रक॥ ज. ह्रीं ३ गधयति॥ जै ह्रीं मूं मूं
लस॥ ज. ह्रीं कल॥ ज. मूं कल॥ ज. कौं कौं कोमानी॥ ज. कौं ॥
निर्वाहक, धुं ट्वा॥ गुका, धुं तिगुका, गाकु, धुं ल, गृहाधस्मत्कर्तजय॥ हि

द्विरुवतुभनिर्य, त्वत्पुसादानमदधनी ॥ जययूष्यगृहावयाज ॥ धूय ॥ सा
याईसहज (येव) धूयायनगलाईनः ॥ गृहाववीनवीनगी, यथाकरुले
सिद्धय ॥ दीय ॥ सूयकाणयददीय, सर्वगतिमित्रायहं, सवाकायनका
ति, दीयाययतिगृहगा ॥ दक्षिणा ॥ उवाधिकमिदकर्म, यातिचिदमस्ति
दक ॥ कुरुसम्युक्तुगसर्व, दक्षिणाईयुहोकरा ॥ यतिष्ठा, का ॥ हयना, सु
यायू ॥ मूलत्कानार्क, सगवयनिवानार्क, तथेव ॥ ॥ जयवावहारास्कर

ह्यपरुवतिरुवर्गायावदाका ॥ गंग, यावहा ॥ गंगाद्यागगवगवयति, गव
तिर्वाग (गंग) ॥ यावदुक्तायिनाकीरुनीकमलतनूर्ध्वदसिद्धाकवाही, तावत्तुर्व
गच्छवृद्धिस्वजनयनिवर्तादानयूजाविनाये ॥ सूयतिष्ठावनदारवतु ॥ ॥
मृथवाथर्थवृत्तव ॥ अचन्दनयाद्र ॥ सुगन्ध ॥ सिन्दूर ॥ मादनी ॥ श्रुत ॥ उजाम ॥
मालायूष्य ॥ निवद्य ॥ रुत ॥ यक्कान्त ॥ जाययू ॥ धूय ॥ दीय ॥ दक्षिणा ॥ यतिष्ठायायू ॥
महूर्तयचैयूष्यावकीर्तु ॥ श्रुतकानयत् ॥ जयवीठिका ॥ यक्षवाद्य ॥ मादाम

या ॥ सर्वेषां यथाशक्ति ॥ श्यामानका ॥ श्रीसन्धर्भा ॥ पूर्वकामति ॥ ॥ त्वंकुडी
ह्यादि ॥ यथावा ॥ ह्यदि ॥ अश्वगत्यादि ॥ नमस्कार ॥ महत्तुल्यव्यवस्था
॥ ॥ तातावलिगर्भ ॥ जयाचक्रकमलमिकावसुगयानादि विलीनास्तुया या
स्वास्वर्गमन्त्रगगनानि स्वास्वासास्तुया ॥ याका ॥ हवनामकूयनिलया
यासंक्षिप्ता धातुम् तादवीनिययकरुक्कषयना ॥ ह्यतुल्यकाचिता ॥ ॥ ज
श्रद्धाविशति ॥ ह्यदिपूर्ववत् ॥ ॥ नन्दकुलयागिन्या नन्दकुलपूज

का ॥ नन्दकुलीकुलाचार्य यचायकुलदिक्षिता ॥ ॥ नमः ॥ शोना ॥ ह्यदि ॥
॥ गिवलिविधानं ॥ ॥ यवर्गसुयान्तर्गर्भ ॥ ॥ जयाचक्रकतिपूर्ववत् ॥ ॥ जश्रु
विना ॥ ह्यवदहा ॥ कजनामनभवचा महावर्गवज्रदहा वाद्यभीमकच्छु
क ॥ ॥ श्रुना ॥ ह्यवदृष्टि नायू ॥ श्रीकान्तिवचनं महापूष्टिरुवनिर्ण लक्ष्मी
सक्तविवर्धन ॥ नसायनायसर्वस्य कमयवर्धयनामृता ॥ ॥ नन्दकुलयागिन्या
यतांरुवरुवर्ज ॥ नन्दकुलयागिन्या नन्दकुलरुववा ॥ नन्दकुलयागिन्या

शतवतीतजः ४ यशमालिनी १ कन्दायीतविधुद्वदकनिकने ४ स दीपितास
 र्वदा गायत्रीसततन्तमामिसिनसासंसावतभाहनी ॥ ॥ सगुण ॥ सिद्धार्थ
 दधियानदसूत्रचिर्नकर्मचयूछुजल ॥ सर्वशुक्तसूयसूकलगागावा
 चनाश्रीरुल १ विषावदविदः ४ यशतसमय ॥ गकाचिर्नवीदया ॥ पूर्वगसि
 ततधुलासूकसूता ४ कर्बलुभमङ्गल ॥ स्वगधानीमाशीवर्दिदवयू गृहीत्वा
 ददत् ॥ यागशीरुवनधनीसूत्रवनीसंगमसिद्धिकरी यदुत्तमूनिदनेकि

नगरेऽस्यूजितासर्वदा। जातिचयककर्षुकानकृष्टर्तुगन्त। गच्छ
 तदिद्वीसतर्तनमामिसिनसालक्रीयतायाह्वला॥ ॥ गतादवविसर्जने॥
 अगच्छगच्छसूनवृष्टस्वस्वस्नानगतीलयं। नकनकमदभानि। यूनवाविज
 यायच॥ यजुं गत न्यासद्वयतात्मलीनं। अस्तु एवलि विसर्जने॥ कर्ण
 निद्रिय॥ सूर्यसाक्षिभाय॥ गताशब्दकर्मकार्क॥ ॥ वृत्तिषीषीषीय
 शुभश्रुष्टाने श्रुष्टाम्नाय जमावृष्टसुमार्य॥ ॥ जंजुलिरुष्टसमयादि

समन्तवर्तिन्यस्तु ॥ १ सर्वधीः प्रवधी भनि द्वात्राय द्वात्रयमवच । कथाय कुरु
दाहि सर्वदिग्गगसंस्तिगा ॥ यागिनी यागवीनद्या सर्वगसमागता ॥ २
दयवर्ममहाचक्र धीनाथवनदामम ॥ यरुक्ता ॥ सासनदवी गुन्यादावर्चन
नता ॥ सर्वसिद्धिप्रसादाम् दवीतर्षारवत्सदा ॥ वीनाया यागिनीनच रति
यन्किमहीतल । तव शक्तवर्तिन्यस्तु समयाचानमलक ॥ धृतिस्मृतिमन ॥ ४
वि मांसमदासि जीवितं । निष्कनयकुदृष्टानां यागिनी गद्यसंक्रान्ता ॥ ५

शुक्लानिक्लृप्तानि धूर्तिमिन्नामुखायितां । निष्कनयकुदृष्टानां यागिनी
संक्रान्ता ॥ ६ उक्तादिक्लयपीठ सुयसाना ॥ यकीर्तिता ॥ डावधीधरु म
हा दिगासुविदिगासूच ॥ महीपालसुवक्ता ॥ सर्वज्ञानानुवच ॥ ७
नीयागयुक्तात्मा समन्तिष्ठनिसाधका ॥ वीनकर्मसूवीनद्या सत्यति
निधवता ॥ सिद्धाथयुक्ताचार्या ॥ साधकाक्षितिसायिन ॥ नगुनवाथगम
वा श्रुतव्याम्बासुनिधन ॥ वायिकुयेकवृक्ता ॥ भगानमारुमन्तल । नाना

दूयधनाभयि वटजाविविधानिच ॥ तच सर्वः यिसंयुष्टा वलिं गृह्णतु सर्व
तः ॥ सनसागताः यदंतर्वा सर्वमत इत्युद ॥ यानवुयन्मयाकर्म य
तुकविधामियत्कर्तुं वलियुष्ययदानन सनुष्टाममचिन्तिका ॥ सर्वकर्म
मिसिद्धतु सर्वधायायसाधुम ॥ गिवगक्रियसादन श्रीकालानमाय
॥ वृत्ति समयवलिदयत् ॥ ॥ अथ अजलादिवलि ॥ वैज अज नथाय कुरु
थ वृत्तचार्यलुमूर्तिकः ॥ उक्तागधुव्याधुय मृयसूदनभवत् ॥

ॐ कायथ ॐ यादन कर्दुवकः ॥ नेनावाताशान्द्रुय डीजदी ॥
कः ॥ अः कम्माहः कम्बनथ खनूसागामूरवस्तुथा र्घ्यालाकः ॥ ३६ ॥
न्यकभवत् ॥ रुदाथाजवनाका उकातातर्जंगका थविवादंयूनस्तु ॥
नयानागकः ॥ यचधुरुटकावकः ॥ वीवसिंहायकूटस्थी मद्यरास
गाकः ॥ नानवधलवाद्यध वृगलः ॥ धुकर्तुदकः ॥ यजलाकः ॥ धुनाकः
श्रीकः ॥ कवनस्तुथा ॥ यकेश गङ्गायालः ॥ नयंचागनमास्तु ॥ यंचा

०

५

गचमहाकण निधियश्चसंस्कृत । चतुर्विंशत्ययार्कव रेववारवधार्चितः
 ॥ यथक्कससुवृष्य सर्वकाद्यविन्दुध । मृजलादिमहाकण ककानार्क
 नमामहे ॥ ॐ अकारंकीकृ ॥ मृजनादिमहाकणयालायवलिगृहं २ स्वाहा ॥
 नूतिमृजनादिवलि ॥ ॥ ततावतीषायागिनीवलि ॥ ॐ अचधुधधुमहाक
 सा इमूखीसूमुखीवना । नवतिषयवाधाना सोम्यारीमामहावला ॥ ॐ अच
 विजयाचैव मृजितामृयनाजिता । महाकणविन्दुयादी शुक्लाचकारनाद

का ॥ जागदानीसंदानीच उद्याविषुक्कलवती । यीधलीदूयाच
 स्यदानिणी ॥ रुडकालीसुरडाच रुडारीमासूरुडिका । दारितनकुमान
 कयालधानिणी ॥ दारि (६) वूमहायामी शुक्कमूधुषवाधना ॥ ॐ अमृधान
 दिय (७) दारिषायागिनीयावलिगृहं २ स्वाहा ॥ नूतिवतिणीयागिनीवलि ॥
 ॐ अजयाचविजयाचैव जयनीवायनाजिता । नन्दारडातथारीमा कलाधैव
 सुकातथा ॥ ६ ॥ दिवयाग्निमहायाग्नि सिद्धियाग्नि (६) ध्वन साकिनीकालना

पीत दुर्गकानी जभा कनि ॥ ८ ॥ गरीना धाव धीसूला यवनी गी डलानिका ।
 रीमधीच न... कालासूखीतथेवच ॥ ८ ॥ यिगाचीरुकिनीचेव यरुधी
 पूर्णटीतथा... अरुसुखीसिद्धि दुष्टि... कालथेवच ॥ ८ ॥ हूंकानीराखनी
 दीर्घा धूमाकि कल... यिया । मार्तंगीकाकदृष्टिच तथापिपूर्वचानुकि ॥ ८ ॥
 दाही... नकाशीविश्व... विधी । जयकनीनोडवीरसी दुष्टी
 नराजनी ॥ ८ ॥ विदीवरुदमस्तकाली कंकालीकिरुगानना को...

डाव वायू... दयानना ॥ ८ ॥ बाझीचवेषूवीनोड ।
 नादीनावरि... विवाहतीचउ... यिका ॥ ८ ॥ नूददवीम...
 कूडमस्तका... चवसधियागिनीथावलिगृह २सर्वगा नि...
 दिवर्ष... ॥ नूतिचवसधियागिनीवलि ॥ ८ ॥ गतामस्तवलि
 हूँ... ॥